आनन्द का राज मार्ग

डॉ. उम्मेदसिंह बैद 'साधक'

Published by
Shuktika Prakashan
New Alipur, Kolkata 700063

Anand ka raaj maarg
Written by Dr. Ummedsingh Baid 'Sadhak'
ISBN : 978-93-84435-26-4
Published by : Sustika Prakashn
Unit 8, 5th floor, Phase-1
New alipur market complex,
Kolkata 700063
1st Edition
©All rights reserved to Authour
Printed By: Mishka infotech pvt. Limited
Unit 8 5th floor, Phase 1
New alipur market complex
Kolkata 700053

Price : Rs. 65/-
Cover : Pathik Sahoo

आनन्द का राज मार्ग

डॉ. उम्मेदसिंह बैद 'साधक'

प्रकाशक : शुक्तिका प्रकाशन
यूनिट ८, ५ फ्लोर, फेज – १
कोलकाता – ७०००६३
मुद्रक : मिसका इन्फोटेक प्रा. लिमिटेड
यूनिट ८, ५ फ्लोर, फेज १
न्यू आलीपुर मार्केट कॉम्प्लेक्स
कोलकाता – ७०००५३
मूल्य :रू ६५/-
आवरण और चित्र सज्जा: पथिक साहू

अनुक्रमणिका

ज्ञान : सर्व समाधान	4
प्रकृति की भाषा	8
अणु-रचना का योग	13
जागृति की आशा	21
जग के मानव एक	29
आनन्द का राजमार्ग	43
सूक्ष्म-जगत की राह	51
सार्वभौम-सिद्धान्त	61
सुखधर्मी मानव	73
समझ बने तो सुख	81

ज्ञान : सर्व समाधान

आओ मित्रों बात करें कुछ
मानव के विज्ञान की।
समझो और समझाओ सबको
बातें जीवनज्ञान की॥

सही बात को जान, सही बात को मान।
सही बात को जान, सही बात को मान॥

तन-मन स्वस्थ रहे और
समृद्धि हो नित परिवार में।
सम्बन्धों में तृप्ति और
पहचान हो सही समाज में॥

सब प्रश्नों का समाधान
पा जाऊँ केवल ज्ञान में।
यह सारी चाहत मानव की
पूरी हो जाए संज्ञान में।।

सही कार्य व्यवहार से बनती
राहें सरल सुजान की।
समझो और समझाओ सबको
बातें जीवन ज्ञान की।।

सही बात को जान, सही बात को मान।
सही बात को जान, सही बात को मान।। 1

आओ मित्रों बात करें कुछ
मानव के विज्ञान की।
समझो और समझाओ सबको
बातें जीवनज्ञान की॥

सही बात को जान, सही बात को मान।
सही बात को जान, सही बात को मान॥

शब्द शास्त्र बन गये अर्थ
और वस्तु गायब हो गए।
कथनी करनी भेद सब कहीं
अर्थ-भाव ज्यों खो गए॥

राह खो गई मानवता की
नीति नियम सब सो गए।
राह दिखाई नागराज ने,
बाबा सबके हो गये।

मध्यस्थ दर्शन को जीना
राहें सरल सुजान की।।
समझो और समझाओ सबको
बातें जीवनज्ञान की।

सही बात को जान सही बात को मान।
सही बात को जान सही बात को मान।। 2

प्रकृति की भाषा

आओ मित्रों बात करें कुछ
मानव के विज्ञान की।
समझो और समझाओ सबको
बातें जीवनज्ञान की॥

सही बात को जान, सही बात को मान।
सही बात को जान, सही बात को मान॥

राजनीति या धर्मनीति
सारे अनीति में डोलते।
शिक्षा और समाज नीति
के तारे गर्दिश खो गये॥

मानव को पशु बना दिया
विज्ञान ने कितने प्रश्न दिये।
आध्यात्मिक राहों में आकर
रहस्य गहरे हो गये।।

इस दुविधा में राह बताई
बाबा ने संज्ञान की।
समझो और समझाओ सबको
बातें जीवनज्ञान की।

सही बात को जान सही बात को मान।
सही बात को जान सही बात को मान।। 3

आओ मित्रों बात करें कुछ
मानव के विज्ञान की।
समझो और समझाओ सबको
बातें जीवनज्ञान की॥

सही बात को जान, सही बात को मान।
सही बात को जान, सही बात को मान॥

मूल्य चरित्र व नैतिकता
आचरण की सीमा रेखा है।
कार्य और व्यवहार में
पूरी मानवता को देखा है॥

सुख, शान्ति, सन्तोष, उमंग का
स्वप्न सभी ने देखा है।
स्वप्न धरा पर उतरे यह
दर्शन की सीमा रेखा है।।

टुकड़े टुकड़े नही बात यह
सार्वभौम सिद्धान्त की।
समझो और समझाओ
सबको बातें जीवनज्ञान की।।

सही बात को जान सही बात को मान।
सही बात को जान सही बात को मान।। 4

अणु-रचना का योग

आओ साथियों समझ बढ़ायें
जाने प्रकृति की भाषा।
समझें और समझायें क्या होते
विचार, इच्छा, आशा।

चार अवस्था जान यही हैं सच्चा ज्ञान।
चार अवस्था जान यही हैं सच्चा ज्ञान।

पदार्थ अवस्था पूर्ण हुई तो
आनन्द उत्सव मच गया।
आनन्द और उत्साहपूर्वक
पदार्थ आगे बढ़ गया।।

घटना नई घट गई
भौतिक-रासायनिक क्रियाओं से।
प्राणावस्था प्रकट हो गई
श्वांस क्रिया की राहों से।।

होने से पोषण तक आयी
प्रकृति की सुन्दर भाषा।
समझें और समझायें क्या होते
विचार, इच्छा, आशा।

चार अवस्था जान यही है सच्चा ज्ञान।
चार अवस्था जान यही है सच्चा ज्ञान।। 5

आओ साथियों समझ बढ़ायें
जाने प्रकृति की भाषा।
समझें और समझायें क्या होते
विचार, इच्छा, आशा।

चार अवस्था जान यही है सच्चा ज्ञान।
चार अवस्था जान यही है सच्चा ज्ञान।

जीवन पाया पर ना जाना,
जीवन का क्या लक्ष्य है।
मानव सबसे ऊँचा माना,
मानव के सब भक्ष्य हैं।।

भक्ष्य नहीं सुन मानव प्यारे
तीनों तेरे रक्ष्य है।
प्रयोजन को समझो मानव
यही तुम्हारा लक्ष्य है।।

स्वार्थ भाव पशु-राक्षस पद है
देना देवों की भाषा।
समझें और समझायें क्या होते
विचार, इच्छा, आशा।

चार अवस्था जान यही है सच्चा ज्ञान।
चार अवस्था जान यही है सच्चा ज्ञान। 6

आओ साथियों समझ बढ़ायें
जाने प्रकृति की भाषा।
समझें और समझायें क्या होते
विचार, इच्छा, आशा।

चार अवस्था जान यही है सच्चा ज्ञान।
चार अवस्था जान यही है सच्चा ज्ञान।

पलपल उत्सव हर पल
आनन्दों की शुभ बरसात है।
नित्य नयी घटना का होता
पल-पल में रोमान्च है।।

कल-कल झरने स्पर्श हवा का
तितली संग रोमांस है।
फूलों पर गुञ्जन भंवरों का
बगिया भरी सुवास है।

खिली प्रकृति सुना रही है
सबको जीवन की भाषा।
समझें और समझायें क्या होते
विचार, इच्छा, आशा।

चार अवस्था जान यही हैं सच्चा ज्ञान।
चार अवस्था जान यही हैं सच्चा ज्ञान। 7

आओ साथियों समझ बढ़ायें
जाने प्रकृति की भाषा।
समझें और समझायें क्या होते
विचार, इच्छा, आशा।

चार अवस्था जान यही हैं सच्चा ज्ञान।
चार अवस्था जान यही हैं सच्चा ज्ञान।

जीवन और प्राण की चर्चा
बहलाती उलझाती है।
प्राणावस्था जीवावस्था
विकास क्रम की थाती है।

जड़ चेतनमय चार अवस्था
जैसे नूतन पाती है।
जागृति-क्रम में नयी नयी
धारायें क्रम से आती हैं।

सहअस्तित्व में गुंथी हुई है
आनन्दों की परिभाषा।
समझें और समझायें क्या होते
विचार, इच्छा, आशा।

चार अवस्था जान यही है सच्चा ज्ञान।
चार अवस्था जान यही है सच्चा ज्ञान। 8

जागृति की आशा

आओ मित्रों तुम्हें बताऊँ,
इस जीवन की परिभाषा।
समझो और समझाओ क्या होते
विचार, इच्छा, आशा।

जीवनविद्या जान, जो जाना सो मान।
जीवनविद्या जान, जो जाना सो मान।।

परमाणु से अणु, अणु से
अणु-रचना का योग बना।
भौतिक रसायनिक क्रिया से
श्वांस लिया और प्राण बना।

जीवनक्रिया जुड़ी तो
जीवावस्थामय संसार बना।
जीवन आशा लिए भार से
मुक्त हुआ संज्ञान बना।

विकास पूरा हुआ तो अब
जागी हैं जागृति की आशा
समझो और समझाओ क्या होते
विचार, इच्छा, आशा।

जीवनविद्या जान जो जाना सो मान।
जीवनविद्या जान जो जाना सो मान।। 9

आओ मित्रों तुम्हें बताऊँ,
इस जीवन की परिभाषा।
समझो और समझाओ क्या होते
विचार, इच्छा, आशा।

जीवनविद्या जान जो जाना सो मान।
जीवनविद्या जान जो जाना सो मान।।

गठनपूर्ण होते ही समझो
भारबन्ध से मुक्त हुआ।
जीवनपद पाकर परमाणु
आशा बन्धन-युक्त हुआ।।

पांच पांच अक्षय बल शक्ति,
दसों क्रियाओं युक्त हुआ।
देह चलाने में समर्थ
जीवन शरीर में व्यक्त हुआ।

देही शाश्वत नश्वर देह में
प्रकट हुई जीवन-भाषा।
समझो और समझाओ क्या होते
विचार, इच्छा, आशा।

जीवनविद्या जान जो जाना सो मान।
जीवनविद्या जान जो जाना सो मान।। 10

आओ मित्रों तुम्हें बताऊँ,
इस जीवन की परिभाषा।
समझो और समझाओ क्या होते
विचार, इच्छा, आशा।

जीवनविद्या जान जो जाना सो मान।
जीवनविद्या जान जो जाना सो मान।।

विकास-क्रम है, विकास है;
जागृतिक्रम जागृति देख लो।
अस्तित्व ही सह-अस्तित्व है
स्वयं जांच लो परख लो।

पूरकता उपयोगिता का
चक्र निरन्तर देख लो।
मानव पद में आ पाने की
समझ शिविर से सीख लो।

जीवनविद्या प्रमाण है
जो भी आया, समझा जांचा।
समझो और समझाओ क्या होते
विचार, इच्छा, आशा।

जीवनविद्या जान जो जाना सो मान।
जीवनविद्या जान जो जाना सो मान।। 11

आओ मित्रों तुम्हें बताऊँ,
इस जीवन की परिभाषा।
समझो और समझाओ क्या होते
विचार, इच्छा, आशा।

जीवनविद्या जान जो जाना सो मान।
जीवनविद्या जान जो जाना सो मान।।

सुख की कमी दुःख बनती,
जो नहीं जानते सो भ्रम है।
अन्धकार है वहीं जहां पर
प्रकाश की मात्रा कम है।

जब तक समाधान ना मिलता
यही समस्या का भ्रम है।
सुख की यात्रा शुरु हुई तो
समझो यह जागृतिक्रम है।

भ्रम से निकले जागृति गान की
करनी है मिलकर अर्चा।
समझो और समझाओ क्या होते
विचार, इच्छा, आशा।

जीवनविद्या जान जो जाना सो मान।
जीवनविद्या जान जो जाना सो मान। 12

जग के मानव एक

आओ साथियों समझ बढ़ायें
जाने प्रकृति की भाषा।
समझें और समझायें क्या होते
विचार, इच्छा, आशा।

चार अवस्था जान यही है सच्चा ज्ञान।
चार अवस्था जान यही है सच्चा ज्ञान।

जितनी क्रिया देह की है
उतनी ही जीवन की जानो।
बल और शक्ति पांच पांच
जो देह इन्द्रियां पहचानो।।

मन वृत्ति और चित्त-बुद्धि
फिर केंद्र आत्मा को जानो।
आशा, विचार, इच्छा संग
संकल्प और अनुभव जानो।

साढे चार क्रिया से बढकर
दसों क्रियाओं की भाषा।।
समझ के फिर समझाओ क्या होते
विचार, इच्छा, आशा।

जीवन को पहचान यही है सच्चा ज्ञान।
जीवन को पहचान यही है सच्चा ज्ञान।।13

आओ साथियों मिलकर समझें
हम जीवन की परिभाषा।
समझ के फिर समझाओ क्या होते
विचार, इच्छा, आशा।।

जीवन को पहचान यही है सच्चा ज्ञान ।
जीवन को पहचान यही है सच्चा ज्ञान।।

ममता और वात्सल्य, स्नेह
सब जीवन के शुभ भाव हैं
दया कृपा करुणापूर्वक
जीना मानव की चाह है।

दीन हीन और क्रूर बना तो
क्यों पकड़ी यह राह है।।
मानव पद फिर पा जाये तो
सभी तरफ वाह वाह है।

देह को जाना आओ अब
हम समझें जीवन की भाषा।
समझ के फिर समझाओ क्या होते
विचार, इच्छा, आशा।

जीवन को पहचान यही है सच्चा ज्ञान।
जीवन को पहचान यही है सच्चा ज्ञान।। 14

आओ साथियों मिलकर समझें
हम जीवन की परिभाषा।
समझ के फिर समझाओ क्या होते
विचार, इच्छा, आशा।।

जीवन को पहचान यही है सच्चा ज्ञान।
जीवन को पहचान यही है सच्चा ज्ञान।।

जिसके पास है जो वस्तु
वह ही बाँटेगा तथ्य है।
दु:खी है जो दुःख ही देगा
सभी जानते सत्य है।

बेहतर है सुख पा लो पहले
फिर कहना जो कथ्य है।
जो समझा वो समझायेगा
बड़ा सुहाना तथ्य है।

दुःख मिटे सबके मन रहती
शाश्वत सुख की चिर आशा।
समझ के फिर समझाओ क्या होते
विचार, इच्छा, आशा।

जीवन को पहचान यही है सच्चा ज्ञान।
जीवन को पहचान यही है सच्चा ज्ञान।। 15

आओ साथियों मिलकर समझें
हम जीवन की परिभाषा।
समझ के फिर समझाओ क्या होते
विचार, इच्छा, आशा।।

जीवन को पहचान यही है सच्चा ज्ञान।
जीवन को पहचान यही है सच्चा ज्ञान।।

प्रियहित लाभ से जुड़ी चाहतें
शाश्वत सुख ना दे सकती।
न्याय धरम से जुड़ने पर ही
सच्ची राहत मिल सकती।

साढे चार में अटका मानव
समझ अधूरी ही रहती।
सही समझ ही समाधान है
जीवनविद्या सच कहती।

समाधान आचरण में आकर
बनता जीवन की भाषा।
समझ के फिर समझाओ क्या होते
विचार, इच्छा, आशा।

जीवन को पहचान यही है सच्चा ज्ञान।
जीवन को पहचान यही है सच्चा ज्ञान।। 16

आओ साथियों मिलकर समझें
हम जीवन की परिभाषा।
समझ के फिर समझाओ क्या होते
विचार, इच्छा, आशा।।

जीवन को पहचान यही है सच्चा ज्ञान।
जीवन को पहचान यही है सच्चा ज्ञान।।

सुख की चाहत में तो सारे
जग के मानव एक हैं।
सुख देना चाहते सभी को
इसी अर्थ में नेक हैं।

सुख पाने की राहें सबकी
भिन्न हैं अनेक हैं।
गलती में अनेक हैं लेकिन
सही में सारे एक हैं।

नेक बने तो एक बनेंगे
सबके मन में यह आशा।
समझ के फिर समझाओ क्या होते
विचार, इच्छा, आशा।

जीवन को पहचान यही है सच्चा ज्ञान।
जीवन को पहचान यही है सच्चा ज्ञान।। 17

आओ साथियों मिलकर समझें
हम जीवन की परिभाषा।
समझ के फिर समझाओ क्या होते
विचार, इच्छा, आशा।।

जीवन को पहचान यही है सच्चा ज्ञान।
जीवन को पहचान यही है सच्चा ज्ञान।।

जीवन खुद ही तोल रहा
निज कार्य और व्यवहार को।
प्रियहित लाभ या उससे उल्टा
संवेदन संसार को।

न्याय धरम और सत्य मिलेगा
निश्चित समझदार को।
बारह राहें तुलन-क्रिया की
समझो इस सन्चार को।

जैसे जैसे समझ बनेगी
संवर जायेगी हर भाषा।
समझ के फिर समझाओ क्या होते
विचार, इच्छा, आशा।

जीवन को पहचान यही है सच्चा ज्ञान।
जीवन को पहचान यही है सच्चा ज्ञान॥ 18

आओ साथियों मिलकर समझें हम
जीवन की परिभाषा।
समझ के फिर समझाओ क्या होते
विचार, इच्छा, आशा।।

जीवन को पहचान यही है सच्चा ज्ञान।
जीवन को पहचान यही है सच्चा ज्ञान।।

पूर्ण गठित परमाणु जीवन
सुख पाने की चाह है।
सुविधा से सुख नहीं मिले
उसकी कुछ अलग सी राह है।

क्या है प्रयोजन जीवन का
समझो तो जगता भाव है।
देह मिली तो जीवन की
अब सारी यात्रा चाव है।

सूचना मिली समझ पाने की
जागी है सच्ची आशा।
समझ के फिर समझाओ क्या होते
विचार, इच्छा, आशा।

जीवन को पहचान यही है सच्चा ज्ञान।
जीवन को पहचान यही है सच्चा ज्ञान।। 19

आनन्द का राजमार्ग

आओ मित्रों बात करें हम,
सुख-आश्रय पारिवार की।
समझो और समझाओ सबको
बातें जीवनज्ञान की।

सहअस्तित्व को जान बिन जाने ना मान।
सहअस्तित्व को जान बिन जाने ना मान।

सम्बन्धों में तृप्ति का यह
बहुत बड़ा सोपान है।
पारिवारों में समृद्धि का फ़िर
आ जाता विज्ञान है।

समाज में निर्भयता का
अविरत चलता संज्ञान है।
सृष्टि-सन्तुलन सध जाता
यह सच्चा अवधान है।

स्वर्ग उतर आता धरती पर
विधा है ऐसे ज्ञान की।
समझो और समझाओ सबको
बातें जीवनज्ञान की।

सहअस्तित्व को जान बिन जाने ना मान।
सहअस्तित्व को जान बिन जाने ना मान।।20

आओ मित्रों बात करें हम,
सुख-आश्रय पारिवार की।
समझो और समझाओ सबको
बातें जीवनज्ञान की।

सहअस्तित्व को जान बिन जाने ना मान।
सहअस्तित्व को जान बिन जाने ना मान।

धरती की रक्षा होगी
मध्यस्थ दर्शन जान लो।
सारे मानव सुख पाएंगे
सही बात को मान लो।

सम्बन्धों की सार्थकता का
खुला राज भी जान लो।
सुख शान्ति सन्तोष आनन्द का
राज मार्ग है मान लो।

जीवन में आ सकती सारी
बातें शुभ-संज्ञान की।
समझो और समझाओ सबको
बातें जीवनज्ञान की।।

सहअस्तित्व को जान बिन जाने ना मान।
सहअस्तित्व को जान बिन जाने ना मान।21

आओ मित्रों बात करें हम,
सुख-आश्रय पारिवार की।
समझो और समझाओ सबको
बातें जीवनज्ञान की।

सहअस्तित्व को जान बिन जाने ना मान।
सहअस्तित्व को जान बिन जाने ना मान।

सारी दुनियां सुखी रहे,
यह भाव न कोरा गल्प है।
सीमाओं में कैसे बन्ध सकता
यह ऐसा कल्प है।

ईर्ष्या और विरोध की चर्चाएं
सब झूठा जल्प है।
वसुधा होगा कुटुम्ब जैसा
भारत का संकल्प है।

भारत कैसे बात करेगा
विरोध की अज्ञान की।
समझो और समझाओ सबको
बातें जीवनज्ञान की।

सहअस्तित्व को जान बिन जाने ना मान।
सहअस्तित्व को जान बिन जाने ना मान। 22

आओ मित्रों बात करें हम,
सुख-आश्रय पारिवार की।
समझो और समझाओ सबको
बातें जीवनज्ञान की।

सहअस्तित्व को जान बिन जाने ना मान।
सहअस्तित्व को जान बिन जाने ना मान।

कृण्वन्तौ विश्वमार्यं का
सपना जिससे सत्य हो।
वही राह अपनानी जिसमें
भला सभी का नित्य हो

विरोध का स्वर ना आ पाये
ऐसा सबका कृत्य हो।
सार्वभौम है धर्म सभी
अपना ले ऐसे तथ्य हों।

भारत करता आया
सदियों से चर्चा संज्ञान की।
समझो और समझाओ सबको
बातें जीवनज्ञान की।

सहअस्तित्व को जान बिन जाने ना मान।
सहअस्तित्व को जान बिन जाने ना मान।23

सूक्ष्म-जगत की राह

आओ जानें भ्रम और दुःख हैं
उपज सिर्फ अज्ञान की।
समझो और समझाओ सच्ची
बातें जीवन ज्ञान की।

सही बात को जान सही बात को मान।
सही बात को जान सही बात को मान।।

ना जाना अब तक जीवन को
जीते आये देह तक।
सुविधा में सुख मान लिया तो
मरना माना देह तक।।

जीना मरना दुःख भोगना
सारी दौड़ है देह तक।
भ्रम में भटक रहे हैं सारे
कैसे पहुँचे गेह तक।।

जीवनविद्या शिविर में खुलती
हैं आँखे संज्ञान की।
समझो और समझाओ सच्ची
बातें जीवन ज्ञान की।।

सही बात को जान सही बात को मान।
सही बात को जान सही बात को मान।।24

आओ जानें भ्रम और दुःख हैं
उपज सिर्फ अज्ञान की।
समझो और समझाओ
सच्ची बातें जीवन ज्ञान की।

सही बात को जान सही बात को मान।
सही बात को जान सही बात को मान।।

सुविधा में सुख नहीं है
सुविधा भी है सुख की राह में।
सुख सुविधा को एक मान,
भ्रम पैदा हो गया चाह में।।

सुविधा से सुख पाने की
कोशिशें की बेकार में।
भौतिक साधन क्या दे सकते
सूक्ष्म जगत की राह में।।

देह चले संवेदन में
जीवन राहें संज्ञान की।
समझो और समझाओ
सच्ची बातें जीवन ज्ञान की।।

सही बात को जान सही बात को मान।
सही बात को जान सही बात को मान।। 25

आओ जानें भ्रम और दुःख हैं
उपज सिर्फ अज्ञान की।
समझो और समझाओ
सच्ची बातें जीवन ज्ञान की।

सही बात को जान सही बात को मान।
सही बात को जान सही बात को मान।।

अब तक था रहस्य जीवन
कितनी बातें अनजान थी।
सुख-दुःख, पुण्य-पाप की गाथा
केवल भ्रम की खान थी।।

समाधान पाने की सारी
कोशिशें लाचार थी।
उसके बिना देहयात्रा की
सब बातें बेकार थी।।

अब पाया अस्तित्वज्ञान
समझी महिमा संज्ञान की।
समझो और समझाओ सच्ची
बातें जीवन ज्ञान की।।

सही बात को जान सही बात को मान।
सही बात को जान सही बात को मान।।26

आओ जानें भ्रम और दुःख हैं
उपज सिर्फ अज्ञान की।
समझो और समझाओ सच्ची
बातें जीवन ज्ञान की।

सही बात को जान सही बात को मान।
सही बात को जान सही बात को मान।।

देह-यात्रा खप जाती है
सुविधा-संग्रह-भोग में।
भोग से आया रोग तो
मानव ढूंढे सुख को योग में।

भोग-योग रुपी अतियों से
उलझा रोग या शोक में।
वर्तमान से दूर भटकता
मानव भ्रम की झोंक में।

वर्तमान ही होती हैं सब
बातें जागृति गान की
समझो और समझाओ
सच्ची बातें जीवन ज्ञान की।

सही बात को जान सही बात को मान।
सही बात को जान सही बात को मान।।27

आओ जानें भ्रम और दुःख हैं
उपज सिर्फ अज्ञान की।
समझो और समझाओ
सच्ची बातें जीवन ज्ञान की।

सही बात को जान सही बात को मान।
सही बात को जान सही बात को मान।।

अधिमूल्यन, अवमूल्यन और
निर्मूल्यन भ्रम साक्षात हैं,
निर्मूल्यन जीवन का
अधिमूल्यन शरीर का व्याप्त है।

भ्रम से मुक्ति ही मुक्ति,
यह तथ्य बहुत विख्यात है,
जो जैसा है वैसा समझें
उसे ज्ञान सब प्राप्त है।

सजह प्राप्त हो सकती सबको
राहें केवल ज्ञान की
समझो और समझाओ
सच्ची बातें जीवन ज्ञान की।

सही बात को जान सही बात को मान।
सही बात को जान सही बात को मान।। 28

सार्वभौम-सिद्धान्त

बात बताता हूँ मैं अपनी
नासमझी अज्ञान की।
समझा हूँ तो समझाऊँगा
बातें जीवन ज्ञान की।।

सहअस्तित्व को जान बिन जाने ना मान।
सहअस्तित्व को जान बिन जाने ना मान।।

अपनी बात बताता हूँ,
मैं जिद्दी रहा विचारों में।
आदत बदल नहीं सकती,
मैं कहता साफ हजारों में।।

दुखी किया करता था मैं,
अपनों को सरे बाजारों में।
भ्रम पकड़े बैठा था भईया,
आशा और विचारो में।।

भ्रम टूटा तो मजा आ गया,
बात बनी संज्ञान की।
समझा हूँ तो समझाऊँगा
बातें जीवन ज्ञान की।।

सहअस्तित्व को जान बिन जाने ना मान।
सहअस्तित्व को जान बिन जाने ना मान।29

बात बताता हूँ मैं अपनी
नासमझी अज्ञान की।
समझा हूँ तो समझाऊँगा
बातें जीवन ज्ञान की।।

सहअस्तित्व को जान बिन जाने ना मान।
सहअस्तित्व को जान बिन जाने ना मान।।

परिवर्तन की चाहत में ही
भटक रहा मन प्राण से।
संघर्षों के गीत सदा
गाया करता अभिमान से।

देश धरम की आन जगाता
संवेदनमय गान से
खुश होता था भ्रम फैलाकर
मोहग्रस्त था मान से।

अब समझा मैं सही धरम
और सही बात संज्ञान की
समझा हूँ तो समझाऊँगा
बातें जीवन ज्ञान की

सहअस्तित्व को जान बिन जाने ना मान
सहअस्तित्व को जान बिन जाने ना मान ।30

बात बताता हूँ मैं अपनी
नासमझी अज्ञान की।
समझा हूँ तो समझाऊँगा
बातें जीवन ज्ञान की।।

सहअस्तित्व को जान बिन जाने ना मान।
सहअस्तित्व को जान बिन जाने ना मान।।

भारत और हिन्दुत्व के उपर
जान छिड़कता शान से।
पाकिस्तान और मुसलमान
दुश्मन कहता अज्ञान से।

इसाई, कम्युनिस्ट हैं दुश्मन
मारो सबको जान से।
ऐसी कविताओं पर
तारीफें पाई हैं शान से।

समझ अधूरी थी मेरी
कहता बातें अज्ञान की
समझा हूँ तो समझाऊँगा
बातें जीवन ज्ञान की।

सहअस्तित्व को जान बिन जाने ना मान।
सहअस्तित्व को जान बिन जाने ना मान।31

बात बताता हूँ मैं अपनी
नासमझी अज्ञान की।
समझा हूँ तो समझाऊँगा
बातें जीवन ज्ञान की।।

सहअस्तित्व को जान बिन जाने ना मान।
सहअस्तित्व को जान बिन जाने ना मान।।

माना अब तक ना उतरी है
जीवन में जीवनविद्या।
जैसे समझ बनेगी वैसे
उतरे जीवन में विद्या।

बदल रहा है स्वभाव मेरा
उपकारी जीवनविद्या
आशा करता इसी देह में
पा लूंगा सारी विद्या।

इस विश्वास में सुख देती
सारी बातें संज्ञान की।
समझा हूँ तो समझाऊँगा
बातें जीवन ज्ञान की।

सहअस्तित्व को जान, बिन जाने ना मान।
सहअस्तित्व को जान बिन जाने ना मान।32

बात बताता हूँ मैं अपनी
नासमझी अज्ञान की।
समझा हूँ तो समझाऊँगा
बातें जीवन ज्ञान की।।

सहअस्तित्व को जान बिन जाने ना मान।
सहअस्तित्व को जान बिन जाने ना मान।।

यात्रा में सुख मिलता है तो,
मंजिल भी सुखदायी है।
यात्रा खुद मंजिल लगती,
मेरे मन को यह भायी है।।

किसी तरह भी समझो
अपनी लगती सहज सुहाई है।
जिसको जब भी समझाऊँ,
सबके ही मन को भायी है।।

कहते कहते भी सुनता हूँ
सही बात संज्ञान की।
समझा हूँ तो समझाऊँगा
बातें जीवन ज्ञान की।।

सहअस्तित्व को जान बिन जाने ना मान।
सहअस्तित्व को जान बिन जाने ना मान।।33

बात बताता हूँ मैं अपनी
नासमझी अज्ञान की।
समझा हूँ तो समझाऊँगा
बातें जीवन ज्ञान की।।

सहअस्तित्व को जान बिन जाने ना मान।
सहअस्तित्व को जान बिन जाने ना मान।।

सही अर्थ पाया है मैनें,
देश भक्ति और धर्म का।
कोई भी विरोध ना टिकता,
ऐसा तत्व है मर्म का।।

सार्वभौम सिद्धान्त मिल गया,
बिना पाप के कर्म का
सीमाओं में बन्द न होता
ज्ञान सत्य और धर्म का।

समाधान देती है सही
समझ सबको संज्ञान की।।
समझा हूँ तो समझाऊँगा
बातें जीवन ज्ञान की।

सहअस्तित्व को जान बिन जाने ना मान
सहअस्तित्व को जान बिन जाने ना मान। 34

सुखधर्मी मानव

आओ मिलकर समझ बनायें
सही सहज संज्ञान की।
समझो और समझाओ सबको
बातें जीवन ज्ञान की।

सही समझ है, ज्ञान बाकी भ्रम अज्ञान।
सही समझ है ज्ञान बाकी भ्रम अज्ञान।

सुख पाने की सारी कोशिश
हो जाती है निष्फल क्यों?
श्वांसें चुकती जीवन की
जीवन ना पाता कुछ हल क्यों?

सज्जन क्यों दुःख पाते हैं
दुर्जन होता है धन्य क्यों?
कर्मो का बन्धन कैसा है
पुनःपुनः फिर जन्म क्यों?

कितने प्रश्नों में उलझी
मानवता जगत-जहान की।
समझो और समझाओ सबको
बातें जीवन ज्ञान की।

सही समझ है ज्ञान बाकी भ्रम अज्ञान।
सही समझ है ज्ञान बाकी भ्रम अज्ञान।। 35

आओ मिलकर समझ बनायें
सही सहज संज्ञान की।
समझो और समझाओ सबको
बातें जीवन ज्ञान की।

सही समझ है, ज्ञान बाकी भ्रम अज्ञान।
सही समझ है ज्ञान बाकी भ्रम अज्ञान।

आहार, निद्रा, भय, मैथुन
पशु मानव की पहचान है।
मानव सुखधर्मी है
सुख की राहें ही संज्ञान है।

शाश्वत सुख पाए बिन भटकन
केवल दुःख अज्ञान हैं
शाश्वत सुख है समाधान में
समझो सच्चा ज्ञान है।

शिविर में आकर राहें खुलती
दबे हुए संज्ञान की।
समझो और समझाओ सबको
बातें जीवन ज्ञान की।

सही समझ है ज्ञान बाकी भ्रम अज्ञान।
सही समझ है ज्ञान बाकी भ्रम अज्ञान।।36

आओ मिलकर समझ बनायें
सही सहज संज्ञान की।
समझो और समझाओ सबको
बातें जीवन ज्ञान की।

सही समझ है, ज्ञान बाकी भ्रम अज्ञान।
सही समझ है ज्ञान बाकी भ्रम अज्ञान।

साढे चार में भटके मानव
दुःख पाता दुःख ही देता।
चिन्तनपूर्वक आगे बढना
मानव को गरिमा देता।।

मानव पाँच पे आ पाये
तो निसर्ग का सुयोग पाता।
चिन्तन से आगे की यात्रा
सहज सरल यह कर पाता।।

क्रमशः मानव अपनाता है
दशों क्रिया संज्ञान की।
समझो और समझाओ सबको
बातें जीवन ज्ञान की।।

सही समझ है ज्ञान बाकी भ्रम अज्ञान।
सही समझ है ज्ञान बाकी भ्रम अज्ञान।।37

आओ मिलकर समझ बनायें
सही सहज संज्ञान की।
समझो और समझाओ सबको
बातें जीवन ज्ञान की।

सही समझ है ज्ञान बाकी भ्रम अज्ञान।
सही समझ है ज्ञान बाकी भ्रम अज्ञान।

दिशा बदल जाती है सोच की
शिविर में आकर देख लो।
परिवर्तन हो आचरणों में,
खुद में पाकर देख लो।।

अपने ही सुख की खातिर
अब जीवनविद्या सीख लो।
सात दिनों की बात है भैया
मनोयोग से सीख लो।।

सारे प्रश्न समाहित होते
महिमा समाधान की।
समझो और समझाओ सबको
बातें जीवन ज्ञान की।।

सही समझ है ज्ञान बाकी भ्रम अज्ञान।
सही समझ है ज्ञान बाकी भ्रम अज्ञान। 38

समझ बने तो सुख

आओ मित्रों बात करें कुछ
मानव के विज्ञान की।
समझ बने तो सुख मिलता है
सच्चे जीवन ज्ञान की।

व्यापक को पहचान, यही है सच्चा ज्ञान।
व्यापक को पहचान यही है सच्चा ज्ञान।

गठनपूर्ण परमाणु पाता
जीवन पद का मान है।
दूजी ओर प्राण की रचना
कोशिका निर्माण है।

प्राण और जीवन की धारा
अलग-अलग संज्ञान है।
सहज भाव से समझो साथी
जीवन उत्सव-गान है।

व्यापक में भींगी डूबी और
घिरी इकाई ज्ञान की
समझ बने तो सुख मिलता है
सच्चे जीवन ज्ञान की

व्यापक को पहचान, यही है सच्चा ज्ञान
व्यापक को पहचान यही है सच्चा ज्ञान।। 39

आओ मित्रों बात करें कुछ
मानव के विज्ञान की।
समझ बने तो सुख मिलता है
सच्चे जीवन ज्ञान की।

व्यापक को पहचान, यही है सच्चा ज्ञान।
व्यापक को पहचान यही है सच्चा ज्ञान।

घिरी हुई प्रत्येक इकाई
रहे नियंत्रण में हरदम।
भींगी होने से उर्जित है
डूबने से गतिमय हरदम।

गति में श्रम ऊर्जा दबाव है
बल है शक्ति में हरदम।
अस्तित्व में सहअस्तित्व की
अखण्ड धारा है हमदम।

खुलते खुलते खुल जायेंगी
सारी राहें ज्ञान की।
समझ बने तो सुख मिलता है
सच्चे जीवन ज्ञान की।

व्यापक को पहचान, यही है सच्चा ज्ञान।
व्यापक को पहचान यही है सच्चा ज्ञान। 40

आओ मित्रों बात करें कुछ
मानव के विज्ञान की।
समझ बने तो सुख मिलता है
सच्चे जीवन ज्ञान की।

व्यापक को पहचान, यही है सच्चा ज्ञान।
व्यापक को पहचान यही है सच्चा ज्ञान।

सभी शून्य में लटक रहे हैं,
चांद सितारे सूरज गोल।
कंपन घूर्णन गोल गोल सब
चक्कर काटे किसके कौल?

अपने आप व्यवस्था में हैं
बड़ी व्यवस्था में बरजोर।
व्यापक में भींगे डूबे और
घिरे हुए करते रमझोल।

मानव का आधिकार निरीक्षण
करे पूर्ण के मान की।
समझ बने तो सुख मिलता है
सच्चे जीवन ज्ञान की।

व्यापक को पहचान, यही है सच्चा ज्ञान।
व्यापक को पहचान यही है सच्चा ज्ञान।41

आओ मित्रों बात करें कुछ
मानव के विज्ञान की।
समझ बने तो सुख मिलता है
सच्चे जीवन ज्ञान की।

व्यापक को पहचान, यही है सच्चा ज्ञान।
व्यापक को पहचान यही है सच्चा ज्ञान।

धर्मगुरु बहलाते हैं
ईश्वर प्रेरित सन्देशों से।
जिसने ईश्वर समझ लिया
ना उलझेगा उपदेशों से।

ईश्वर की सत्ता चलती है
नियम पूर्ण व्यवस्था से।
सहअस्तित्व प्रकट होता है
केवल सहज अवस्था से।

व्यापक है निष्क्रिय निरन्तर
लहर चले संज्ञान की।
समझ बने तो सुख मिलता है
सच्चे जीवन ज्ञान की।

व्यापक को पहचान, यही है सच्चा ज्ञान।
व्यापक को पहचान यही है सच्चा ज्ञान।42

आओ मित्रों बात करें कुछ
मानव के विज्ञान की।
समझ बने तो सुख मिलता है
सच्चे जीवन ज्ञान की।

व्यापक को पहचान, यही है सच्चा ज्ञान।
व्यापक को पहचान यही है सच्चा ज्ञान।

गठनशील और गठनपूर्ण
परमाणु रचना विश्व है।
विकास-क्रम और विकास की
गाथा ये सारा विश्व है।।

भूखे और अजीर्ण के
संगम से बन पाया विश्व है।
सहअस्तित्व को साबित करता
देखो अपना विश्व है।।

व्यापक में डूबी इकाईयां
कृतज्ञ हैं भगवान की।
समझ बने तो सुख मिलता है
सच्चे जीवन ज्ञान की।।

व्यापक को पहचान, यही है सच्चा ज्ञान।
व्यापक को पहचान यही है सच्चा ज्ञान।43

आओ मित्रों बात करें हम
जीवन के विज्ञान की।
समझें और समझाएं सबको
बातें जीवन ज्ञान की।।

सहअस्तित्व को जान यही है सच्चा ज्ञान।
सहअस्तित्व को जान यही है सच्चा ज्ञान।।

जन-समाज दुनियां सारी,
धरती ही समस्याग्रस्त है।
प्रश्न बड़े विकराल हो गये
फ़ल ना मिले सब त्रस्त हैं।।

भोजन का भी समय ना मिले
जाने किसमें व्यस्त हैं।
विकास का ये माडेल तो
निज में विनाश का अस्त्र है।।

आओ बच्चों बात करें
मानवता के विस्तार की।
समझें और समझाएं सबको
बातें जीवन ज्ञान की।

सहअस्तित्व को जान यही है सच्चा ज्ञान।
सहअस्तित्व को जान यही है सच्चा ज्ञान।।44

आओ मित्रों बात करें कुछ
मानव के विज्ञान की।
समझ बने तो सुख मिलता है
सच्चे जीवन ज्ञान की।

व्यापक को पहचान, यही है सच्चा ज्ञान।
व्यापक को पहचान यही है सच्चा ज्ञान।

धर्म और दर्शन के पीछे
अलग अलग समुदाय बने।
जर-जमीन-जोरु की खातिर
समुदायों में युद्ध ठने।।

फिर आया विज्ञान तो
वस्तु-केंद्रित चिन्तन खूब चले।
ईश्वर और वस्तु के मध्य में
मानव केंद्रित ज्ञान फले।।

मानव ही समझेगा बातें
वस्तु और भगवान की।
समझें और समझाएं सबको
बातें जीवन ज्ञान की।।

सहअस्तित्व को जान यही है सच्चा ज्ञान।
सहअस्तित्व को जान यही है सच्चा ज्ञान।।45

आओ मित्रों बात करें कुछ
मानव के विज्ञान की।
समझ बने तो सुख मिलता है
सच्चे जीवन ज्ञान की।

व्यापक को पहचान, यही है सच्चा ज्ञान।
व्यापक को पहचान यही है सच्चा ज्ञान।

साधन संग्रह के पीछे
पागल है दुनियां देख लो।
सुविधा से सुख पाने हित
छीना-झपटी को देख लो।।

नैतिकता ईमान के
धुर्रे धुर्रे होते देख लो।
लेकिन दुनियां का राजा भी
सुखी नहीं है देख लो।।

सुविधा ना सामान भिन्न हैं
कुंजी सुख सम्मान की।
समझें और समझाएं सबको
बातें जीवन ज्ञान की।।

सहअस्तित्व को जान यही है सच्चा ज्ञान।
सहअस्तित्व को जान यही है सच्चा ज्ञान।।46

आओ मित्रों बात करें कुछ
मानव के विज्ञान की।
समझ बने तो सुख मिलता है
सच्चे जीवन ज्ञान की।

व्यापक को पहचान, यही है सच्चा ज्ञान।
व्यापक को पहचान यही है सच्चा ज्ञान।

समाधान से सुख मिलता हैं
उभय तृप्ति ही न्याय है।
न्याय तन्त्र भ्रम में डूबा पर
करता बस अन्याय है।।

न्याय व्यवस्था के प्रति
जन-गण-मन की एक ही राय है।
मुफ्त मिले, जितनी जल्दी
उतना ही समझो न्याय है।।

जन जन अपनायेगा समझो
सही राह संज्ञान की।
समझें और समझाएं सबको
बातें जीवन ज्ञान की।।

सहअस्तित्व को जान यही है सच्चा ज्ञान।
सहअस्तित्व को जान यही है सच्चा ज्ञान। 47

आओ मित्रों बात करें कुछ
मानव के विज्ञान की।
समझ बने तो सुख मिलता है
सच्चे जीवन ज्ञान की।

व्यापक को पहचान, यही है सच्चा ज्ञान।
व्यापक को पहचान यही है सच्चा ज्ञान।

शिक्षा और समाज व्यवस्था
कैसे कैसे देते घात।
देह मान कर फैलाते हैं
कामोन्माद और भोगोन्माद।

बाजारी यह तन्त्र बिखेरे
चौतरफा वहशी उन्माद।
तीनों भूत बिराजे सिर पर
कैसे उभरे मानववाद।

मानव की चेतना निहारे
राहें सहज सुज्ञान की।
समझें और समझाएं सबको
बातें जीवन ज्ञान की।

सहअस्तित्व को जान यही है सच्चा ज्ञान।
सहअस्तित्व को जान यही है सच्चा ज्ञान।48

आओ मित्रों बात करें कुछ
मानव के विज्ञान की।
समझ बने तो सुख मिलता है
सच्चे जीवन ज्ञान की।

व्यापक को पहचान, यही है सच्चा ज्ञान।
व्यापक को पहचान यही है सच्चा ज्ञान।

गलती को गलती से
अपराधों को फिर अपराध से।
रोकना चाहें सरकारें
कानून सने अपराध से।

न्यायालय भी सजा मुक्त
ना कर पाती अपराध से।
कोई मार्ग नहीं छोड़ा
अब कौन बचे अपराध से।

मध्यमार्ग अपना लो गलती
कभी ना हो इन्सान की।
समझें और समझाएं सबको
बातें जीवन ज्ञान की।

सहअस्तित्व को जान यही है सच्चा ज्ञान।
सहअस्तित्व को जान यही है सच्चा ज्ञान।।49

आओ मित्रों बात करें कुछ
मानव के विज्ञान की।
समझ बने तो सुख मिलता है
सच्चे जीवन ज्ञान की।

व्यापक को पहचान, यही है सच्चा ज्ञान।
व्यापक को पहचान यही है सच्चा ज्ञान।

आओ साथियों बात करें हम
जीवन के विज्ञान की।
समझें और समझाएं सबको
बातें जीवन ज्ञान की।

सहअस्तित्व को जान यही है सच्चा ज्ञान।
सहअस्तित्व को जान यही है सच्चा ज्ञान।

॥ॐ॥

समर्पण

मानव-केन्द्रित मध्यस्थ दर्शन के प्रणेता
ए नागराज को।

आगामी प्रकाश्य साहित्य

- ✓ पश्मीना शाल से साफ़ी (उपन्यास)
- ✓ औसान (उपन्यास)
- ✓ कहानी संग्रह
- ✓ नाटक संग्रह
- ✓ शतक सीरिज
- ✓ टूटता भारत
- ✓ परिवार-सप्तक
- ✓ रामचरितमानस और वेद
- ✓ पर्यावरण शतक
- ✓ साधक के पत्र
- ✓ संस्मरण शतक
- ✓ श्राद्ध
- ✓ सिनेमा पहेली
- ✓ टिप्पणी-शतक
- ✓ परम्परा-आराधक
- ✓ वर्तमान साँख्य-योगदर्शन-विवेचनामुक्तक शतक